साहित्य

इच्छाधारी लोग

• श्रीरंग

इच्छाधारी लोग
बिलों में नहीं रहते
रहते हैं देवलोक में
शीत में सेंकते हैं
ऐश्वर्य की कुनकुनी धूप
ग्रीष्म में रहते हैं
कल्पतरुओं की वातानुकूलित छाँव में

इच्छाधारी लोग
आरामकुर्सियों पर लेटे-लेटे
गिंजवाते हैं
औरतों से पाँव
देखते हुए दूरदर्शन
लेते देश-दुनियाँ की खबर
तलाशते हैं
खबरों की फाइल चित्र में
अपने सम्भाषण

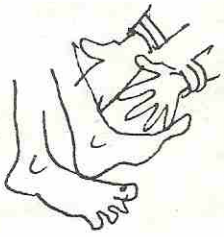

इच्छाधारी लोग
रहते हैं स्वर्ग में
वहीं से रखते हैं
धरती पर निगाह
मुखबिरों के मार्फत
अपने विरुद्ध नारेबाजी, धरना, प्रदर्शन
की खबर सुनकर
धीरे से छोड़ देते हैं हवा

इच्छाधारी लोग
शूद्र मानवों के लिए निषिद्ध
आकाशीय देवमार्गों पर
करते हैं विचरण
स्वर्णपंखों वाले श्वेत घोड़ों से जुते
रथ पर सवार होकर

इच्छाधारी लोग
रहते हैं अपनी प्रभुता सम्पन्नता में धुत्त
अपने पुष्पक विमानों से
कभी-कभार देख लेते हैं
धरती का सुख, दुख, बाढ़, सूखा,
त्रासदी
और पैकेटों में फेंक देते हैं
राहत सामग्री

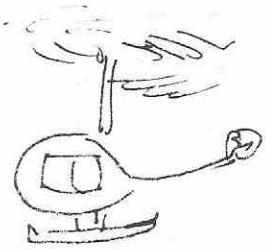

इच्छाधारी लोग
खेलते हैं चौपड़
फेंकते हैं पासे
पीते हैं सोमरस
बिछाकर प्रजा को गोट की तरह

इच्छाधारी लोगों का
चुना-चुनाया होता है इन्द्र
देवराज देवताओं को छोड़कर
करते हैं दुनिया पर राज
क्योंकि इन्द्र राजा तो होता है
पर देवता प्रजा नहीं

इच्छाधारी लोग
होते हैं अजर-अमर
उनके साथ होता है
तीन मुख वाला ईश्वर
जो तीन होकर भी रहता है एक
बदलता है वेश
लेता है अवतार
भेजता है प्रतिनिधि
केवल और केवल
अपने जैसे इच्छाधारियों के हित में

इच्छाधारी लोग
डस लेते हैं इच्छा होने पर...।